पहल

बढ़ते कदम कामयाबी की ओर

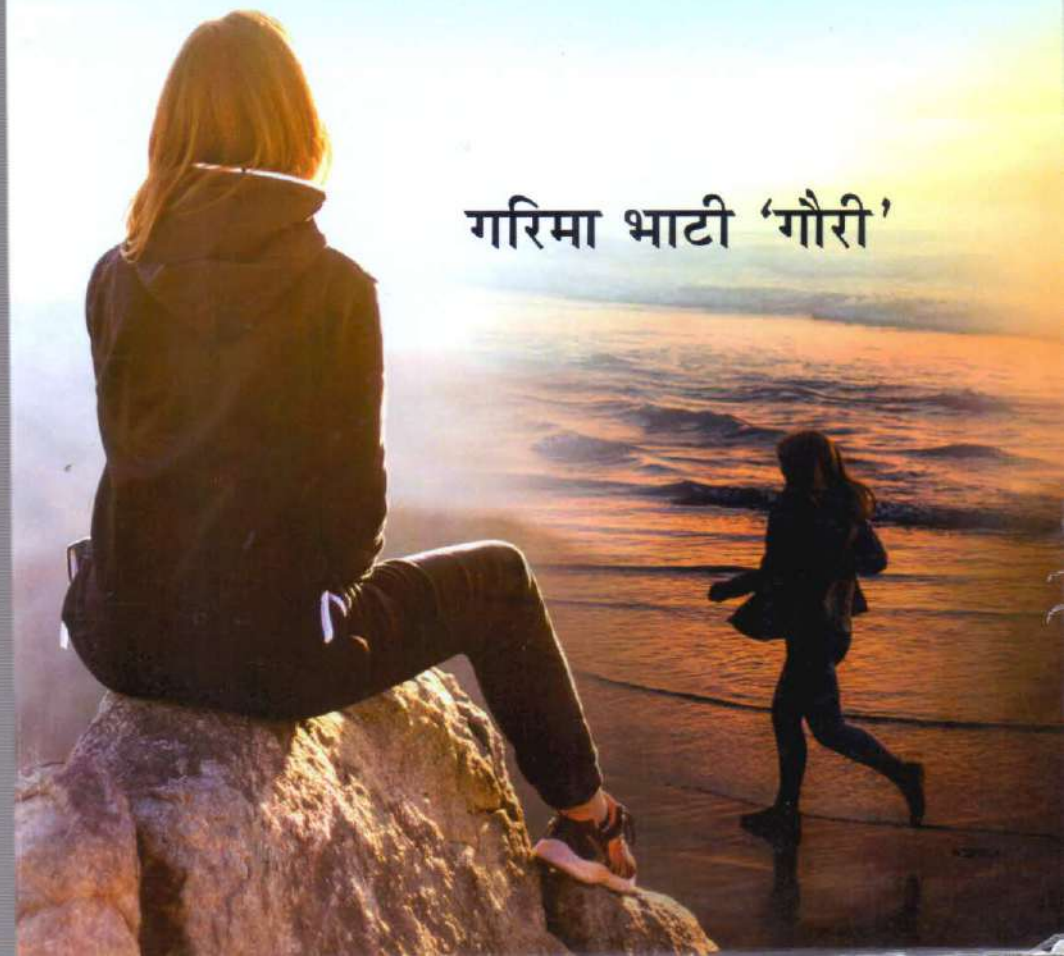

गरिमा भाटी 'गौरी'

अनुक्रमणिका

1. प्रीति चौहान	7
2. अमित कौशल	10
3. कृष्ण कुमार यादव	15
4. रोहित साव	23
5. सुजाता कुमारी	26
6. डॉ. रौबी फौजदार	29
7. डॉ. सुषमा जयसवाल	31
8. डॉ. सुनंदा जैन	33
9. नीता झा	35
10. मो० नौमान 'नमन' मुजफ्फरनगर	38
11. रमेश चंद्रा	41
12. डॉ. साधना तोमर	45
13. डॉ. लता अग्रवाल "तुलजा"	47
14. डॉ. यति शर्मा	55
15. डॉ. लावणे विजय भास्कर	59
16. डॉ. उपासना पांडे	64
17. डॉ. चंद्रेश कुमार छतलानी	67
18. अक्षिता शशी साव	69
19. लता सिंघई	71
20 प्रा. डॉ. गंगा शेळके	74
21 नयन भादुले–राजमाने, 'साहित्यनयन'	84
22. संजय सिंह	90
23. सुरेंद्र कुमार सागर	92
24. श्वेता नेमा, बालाघाट	94
25. मंजू गुप्ता	96
26. पूजा सिंह	98
27. मृत्युंजय द्विवेदी	101
28 रेश्मा मसुरकर	102
29. डॉ. पारुलबहन	107
30. डॉ. राधा दुबे	109

नयन भादुले–राजमाने, 'साहित्यनयन'
जी. के. जोशी (रात्र) वाणिज्य महाविद्यालय
लातुर, (महाराष्ट्र)

सोच

बाजार जाने के लिए समय तो निकाला था, लेकिन फिर भी जाऊँ या ना जाऊँ के उलझन में सीम्मी अटक गई थी। जरा सी धकावट महसूस हो रही थी, लेकिन फिर भी सोचती रही की ना जाऊँ, तो सारे काम धरे–के–धरे ही रह जाएगें, ये सोचकर वह निकल पड़ी। बस आकर ठीक से रुकी भी नहीं थी कि इतनी देर तक राह देख रहे लोगों में हलचल मच गई। दूसरों को पीछे ढकेलते हुऐ खुद आगे बढ़ जाने की कोशिश में लोग बस से उतरने वाले लोगों को भी उतरने नहीं दे रहे थे।

बहुत समय से वहाँ पर खड़े कॉलेज के लड़के एकदम से बस के पास आ गए और इतनी भीड़ में भी वे बड़ी चतुराई से बस में चढ़कर इस तरह आगे बढ़े जैसे उन्होंने इस बात में महारत हासिल की है। बाहर माहौल ऐसा था मानों सारा जहाँ खुशी से खिल–खिला रहा हो लड़के थे कि अपने नजरों से कॉलेज की लड़कीयों के पुरे अंग–प्रत्योंगो को ऊपर से नीचे तक घूर रहे थे। उनकी नजरों से घिन आने वाली लड़कियों की गालियाँ भी खा रहे थे वैसे भी भीड़–भाड़ वाली सिटी बसों में लड़कियों से सटकर खड़े होकर ड्राइवर ब्रेक लगाए या न लगाए सड़क ब्रेक से उनके उपर गिरते संभलते और फब्तियाँ कसते हुए, उनसे नाराज होकर गालियों खाते हुए, खुशी मना रहे थे।

ये तो उनका रोजमर्रा का काम था ना उन्हें कोई रोकता ना टोकता उनका पूरी तरह का बंदोबस्त तो कोई करता ही नहीं था। रोज की मस्ती की तरह वह आज भी इस भीड़–भाड़ में शामिल हुए और महिलाओं के लिए आरक्षित सीटों के पास पहुँच गए।

गाड़ी में इतनी भीड़ थी की लोग एक दूसरे के ऊपर गिर रहे थे। थोड़ा धक्का मुक्की की वजह से तू–तू मैं–मैं हो रही थी। अरे! "यह क्या बात हुई, आप तो मेरे उपर गिरती ही जा रही हो, जरा हटकर खड़ी हो जाओ ना।" इस तरह की नोक–झोक से पूरे बस में हल्ला मचा हुआ था।

इधर जो नवजवानों का झुंड बस में चढ़ा था, उनका हाल भी तो यही था एकदम से सामने दिखे नई फिल्म की पोस्टर पर आमीर की नजर पड़ी और वो चिल्लाया अरे चल रामलीला देखने चलते है, उसके सारे दोस्तों के मुँह से मानो तार टपकने लगी। सब ने हाँ कहा तो चांडाल चौकड़ी थिएटर जाने का मन बनाने लगी। असल में उन लोगों का कोई प्रोग्राम पहले से तय कभी नहीं होता, जब लड़कियाँ देखने को नहीं मिलती है, तब उनका प्रोग्राम बदल जाता है। वैसे इनके प्रोग्राम का अंदाजा कोई नहीं लगा सकता। जी चाहा तो इधर और जी चाहा तो उधर। ऐसी ही कान कटे कुते की तरह घुमते रहते हैं।

बस के अंदर सब लोग अपनी–अपनी दुनिया में मस्त है। स्कूलों से जल्द से जल्द घर पहुँच जाने की चाहत रखने वाले बच्चे, अपने नात–नातिन को बड़ी चाह से कुछ उसकी पसंद की चीजें लेकर जाने वाले नाना–नानी यां दादा दादी कराह लगानेवाले मरीज दिन भर काम करते हुए थके हारे कर्मचारी, आज तो कहीं पर दाना–पानी का जुगाड़ हो पायेगा की हिसाब से घर से निकले और दर–ब–दर की ठोकरें खाते हुए घर वापिस जाने की चाह न होते हुए भी घर की तरफ बढ़ने वाले बेरोजगार युवक, घर के लिए जुगाड़ करती स्तियाँ और शॉपिंग मॉल से बहुत सारी खरीददारी करके लौट रही स्त्रियाँ, इस तरह पूरी बस में भीड़ जमा थी।

एक जगह बस रुकी तो कुछ लोग उतर गए और कुछ चढ़ भी तो गए। थिएटर आ जाने के बाद ये दोस्तों की मंडली नीचे उतर गई। एक दूसरे को खींचा–तानी करते हुए थियेटर में प्रवेश हुआ थिएटर के टिकट बारों में खड़े रहने की बारी आई तो तू–तू मैं मैं

शुरू हो गई। इतने में नवजवान लडकियों का एक झंड वहाँ पर आया और हर किसी के दिल में चाह उभर आई कि में ही टिकट बार में खड़ा हो जाऊँ। वैसे पहले भी वहाँ पर बहुत सारी लड़कियों थी, लेकिन ये थोड़ी हटकर थी। कम उम्र की और शर्मिली। उन्हें देखकर ऐसा लगता था, जैसे पहली बार आई थी। किसी बड़े का साथ में न होना उनके देह बोली से पता चल रहा था। घर के बाहर अकेले आने का नयापन इन लड़कों की झुंड ने एक नजर में पहचान लिया और वह बुरके में आई इन लड़कियों को घूरने लगे।

"चलो अब तक तो मजा नहीं आ रहा था। अब जाके कुछ बात बनेगी। ऐसे कहते हुए एक के बाद एक सारे लाईन में खड़े हो गए। बुरका वैसे स्त्रियों के शरीर को ही नहीं, उनके रूप–रंग को, उनकी आयु को, उनके सपनों को, इतना ही क्यों, उनके समूचे अस्तित्व को ही पूरी तरह ढक कर रख देता है। बुरके के सामने सारे परिचय अपरिचयों में बदल जाते हैं। उसमें कौन कैसा है, ये पहचानना बहुत मुश्किल होता है।

सारे लड़के शोर मचाते हुए अपनी और सभी का ध्यान खिंचने की चेष्टा कर रहे थे। इतने में बुरके में होने वाली नजरों ने क्रोध से उनकी ओर देखा। अब तो उन्हें और जोर आ गया। एक दूसरे को समझाने की चेष्टा करते हुए वे और बेताल बनते जा रहे थे। "अरे, क्या कर रहा है तू यार, समझ में नहीं आता तेरे, सीधी तरह से खड़ा रह। अबे तू तेरा देख मैं तो चूप ही खड़ा हूँ, तू सीधा खड़ा रह। ऐसी उनकी नौक झोंक से ये बच्चियाँ तंग आ चुकी थी। एकाएक से दो नजरों ने आमीर को घूरते देखा तो उसे वह जान पहचान वाली लगी। वह बार बार उन्हीं नजरों को देखकर कुछ जानने की कोशिश कर रहा था, लेकिन कुछ अंदाजा नहीं लगा पा रहा था। वह नजरे भी तो बड़ी आक्षर्य से उसे घूरती रही। आमीर अंदाजा लगा रहा था। ये है कौन ? क्या में इसे जानता हूँ। उसके अंदर बेचौनी–सी महसूस होने लगी। वह कुछ समझ नहीं पा रहा था। इतने में किसी ने धक्का दिया, तो वह सामने वाली लड़की पर गिरने ही वाला था, इतने में संभल गयज्ञं "माफ करना, किसी ने

पीछे से धक्का दिया था। वह कुछ नहीं बोली, सिर्फ नजरों से घूरती रही। "अरे, कौन है भाई जरा ठीक से खड़े रहो, कहकर सीधा खड़ा हो गया।

उसकी आँखो की भाषा आमीर के समझ में नहीं आ रही है। वह अंदर–ही–अंदर असहज महसूस कर रहा है। जैसे उसके आँखो में अपने करीब के व्यक्ति से धोखा खाने जैसे भाव उमड़ रहे हो। या की यह क्या है ? कुछ समझ में नहीं आ रहा था। फिर भी उसे आशा थी कि अर्धचंद्र के समान अपनी दोनों पलकें उठाकर वह उस पर सिग्दृष्टि बरसाए, लेकिन उसके आँखों में ऐसी कोई भाव नहीं थे। एकाएक वहाँ पर हड़बड़ी मच गई। ब्लैक टीकट की वजह से पुलिस कुछ लड़कों को पकड़ रही थी। शोर बढ़ता गया और उसका ध्यान उसी ओर चला गया। कुछ देर बाद उसके ध्यान में आया की जिन आँखों की वजह से वह इतना परेशान था, वह आँखे कहा चली गई। वो तो वहाँ पर थी ही नहीं वह बेचैन–सा हो गया। इधर–उधर देखने लगा। थिएटर में आने के बाद भी उसने बहुत ढूंढा, लेकिन कुछ पता नहीं चला। उसका मन फिल्म देखने में नहीं लगा, वह बार–बार उन्हीं आँखों में खो रहा था। कुछ ढूंढने की कोशिश कर रहा था।

फिल्म खतम हुई और सब बाहर निकल आये। एकाएक फिर से उसे उन आँखों का पता चल गया। वे सब पीछे–पीछे हुल्लडबाजी करते हुए जा रहे थे। और वो आँखे कभी क्रोध से तो कभी दुख से देख रही थी। सारे दोस्तों को मजा आ रहा था। ये तो उनका हर रोज का काम था। किसी का मजाक बनाना उनके दाए हाथ का काम था, पर आज आमीर कुछ समझ नहीं पा रहा था। लड़कियों के झुंड के पीछे–पीछे वह कहीं तर आ गए थे। उनको भी ध्यान में नहीं आया और वे चलते गए। हंसी–मजाक करते रहे। जल्दबाजी एक चरमसीमा तक पहुँच गई। इधर घरवाले राह देख रहे है। अकेली लड़कियाँ घर ठीक ढंग से वापस आ जाय तो ठिक, नहीं तो बच्चीयाँ भी आजकल बहुत जिद करती है। कोई बात मानती ही नहीं क्या जरूरत थी। अपने आप जाने की। कोई बड़ा उनके साथ

जाता तो राहत मिलती। सुकून से कुछ पल बीत जाते। लेकिन माने तब ना।'' इस बेचौनी के साथ यहाँ से वहाँ और वहाँ से यहाँ बरामदे में नानी घुम रही है। उसे तो उम्र का भी ख्याल नहीं, कितने चक्कर काट चुकी है। मालूम नहीं पैर कमजोर लग रहे हैं भारी हो गए है। थकान महसूस हो रही है। फिर भी उस तरफ उसका ध्यान ही नहीं है। वह बस सोचते–सोचते यहाँ से वहाँ और वहाँ से यहाँ चक्कर काट रही है।

माँ अंदर काम कर रही है, लेकिन उसका मन उसमें नहीं है। बजार से आने पर वह भी थक चुकी है। आज बार–बार उसके हाथ से कुछ गिर रहा है। और वह संभलने की कोशिश कर रही है। चाहती है कि यह काम जल्द–से–जल्द निबटा लूँ, तो रास्ते पर दूर तक जाकर देख आऊँ की कहाँ तक आई है ये लड़कियाँ, समय तो हो रहा है आने का लेकिन आई नहीं है। वैसे भी उनके आने से पहले ये बच्ची घर पर आये तो बेहतर है, नहीं तो खेर नहीं।

इतने में बाहर से तेजी से वह आई और वह नानी के गोद में जाकर जोर–जोर से सिसकने लगी। उसकी आँखो में गुस्सा और आँसू दोनो ही थे। लेकिन वह किसके प्रति थे। यह पहचानना बढ़ी मुश्किल था, वह बस रोए जा रही थी। अंदर से सिम्मी आवाज सुनकर तेजी से बाहर आई और देखा की बच्ची नानी की गोद में सिसकियाँ ले रही है। उसके समझ नहीं आया क्या हुआ ? कैसे पूल वो तो ही नहीं कर रही है। बस रोये जा रही है। उसे जब पता चला कि वहाँ पर आई। वह और जोर से रोने लगी और माँ की आगोश में इस तरह घुसी की मानो उसके अंदर समा जाना चाहती हो।

माँ असंमजस में थी। कुछ समझ में नहीं आ रहा था, वह उसे सहलाती रही, चुप करने की कोशिश करती रही। उसे मालूम था, यह कुछ देर तक कुछ बात नहीं कर पाएँगी। लेकिन बात है क्या? इसका पता नहीं चल रहा था। वह लगातार हिचकियाँ दे रही थी। अचानक से बाहर से आमीर घर में अंदर आया और उसके अंदर

आने पर ही वह माँ की आगोश से निकली और चुल्हे के सामने जा खड़ी हुई। क्या हो रहा है ये किसी के समझ में नहीं आ रहा था, इतने में माँ ने बेटी को कंधों से पकड़कर हिलाते हुए पुकारा– बेटी. ..बेटी...बेटी ने माँ की हाथों को हटाकर बुरका उतारा और झट से उसका गला बनाते हुए सामने के चुल्हे में फेंक दिया। लपटती आग की लहरों की वजह से उसके पुरे देह पर प्रतिबिंब लहरा रहा था। सामने खड़ी नानी, माँ और आमीर तीनों उसे बस देखते ही रह गए कुछ समझ में नहीं आया। माँ सोच रही थी बाप रे, अगर इनको पता चला तो।

लेकिन वह तो अपनी ही दुनिया में है, वह बस ध्यान लगाए हुए है. और आमीर शर्म के मारे चुल्लू भर पानी में डुबने की सोच में...

गरिमा भाटी

जन्म : 26 अप्रैल 1989, रबूपुरा, ग्रेटर नोएडा, उत्तर प्रदेश।

शिक्षा : एम.ए. (अंग्रेज़ी, सोशियोल०जी, हिन्दी) एम.एड.,पीएच. डी. (एजुकेशन)।

सन 2011 से अध्यापन कार्य। विभिन्न राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में शोध आलेख प्रस्तुति तथा सहभाग। 20 से अधिक शोधपत्र एवं शोधालेख विविध जर्नल में प्रकाशित। 15 से अधिक कहानियाँ एवं कविताओं राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में प्रकाशित। विभिन्न मंचों पर काव्य गोष्ठियों में सहभागिता एवं काव्य पाठ। महिला केंद्रित विषयों पर काव्य एवं कहानी लेखन।

प्रकाशन : विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं एवं संपादित पुस्तकों में कविताओं का प्रकाशन।

पुरस्कार : दिसंबर 2022 में गोरक्ष सेवार्थ संस्थान द्वारा 'अखिल भारतीय सारस्वत सम्मान' से सम्मानित। 10 जनवरी 2023 में भाषा सहोदरी हिंदी न्यास दिल्ली तथा महात्मा गांधी संस्थान मॉरिशस द्वारा आयोजित मॉरिशस में संपन्न आंतर्राष्ट्रीय हिंदी अधिवेशन, मॉरीशस में 'सहोदरी सम्मान' से सम्मानित। अप्रैल 2023 में त्रिभुवन विश्विद्यालय द्वारा आयोजित अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में सहभागिता एवं 'साहित्योनुरागी सम्मान' से सम्मानित। जून 2023 में जन लेखक संघ द्वारा 'जन साहित्य सृजन सम्मान' से सम्मानित। जून 2023 में नव उदय मासिक पत्रिका द्वारा 'नव उदित साहित्यकार सम्मान 2023' से सम्मानित।

संप्रति : सहायक आचार्या, इंस्टिट्यूट ऑफ टीचर्स एजुकेशन, फ़रीदाबाद, हरियाणा (121004)।

ई-मेल : garimabhati24@gmail.com

प्रगति प्रकाशन
134, आदर्श नगर, कोन्नगर, हुगली,
पं.बं.-712246, मो. 987471324

ISBN 978-93-5917-063-3